

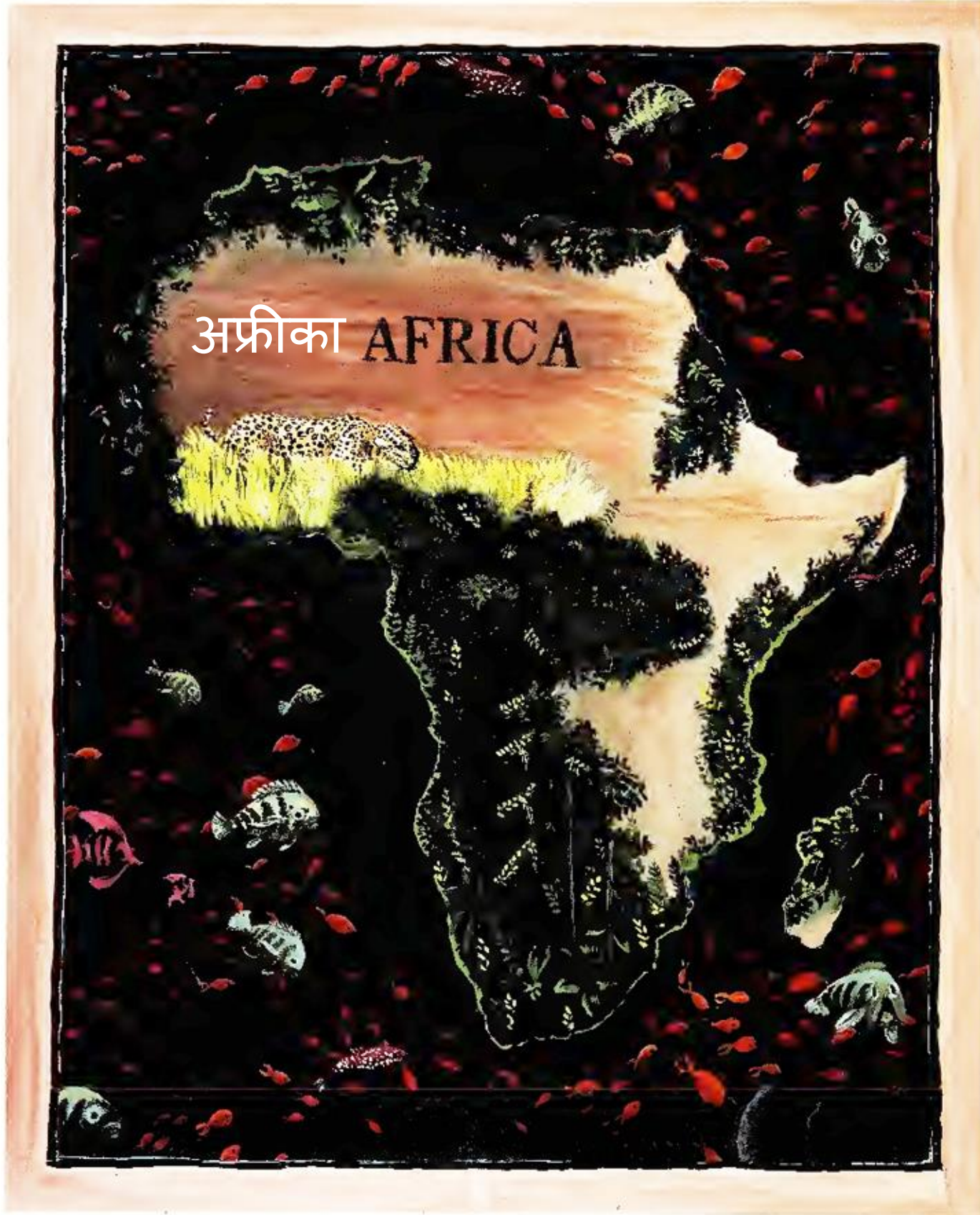
अगासु तेन्दुआ राजा का आख्यान

पुनर्कथन व चित्र: रिक ड्युप्रे

भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा

अगासु अफ्रीका में एक गुलाम था,
जिसके दिन मछली पकड़ने वाली बड़ी नौका
में, बेड़ियों से जकड़े, नाव को पतवार से खेते
गुज़रते थे। काम हाड़ तोड़ने वाला था और
अगासु को अपने गाँव की याद सताती थी।
वह आज़ादी को तरसता था। तब एक रात
समुद्र ने अगासु को एक अद्भुत कहानी
सुनाई, जो ऐसी भविष्यवाणी में खत्म हुई
जिसे सिर्फ अगासु ही पूरी कर सकता था।
पर पहले उसे खुद को उन बेड़ियों से मुक्त
करना था जो उसे जकड़े हुई थीं।

अगासु की कहानी अनूठी नहीं है। न्याय
और बुनियादी इन्सानी अधिकारों का संघर्ष
आज भी दुनिया के हर कोने में, हर दिन
होता है। जब अगासु की आज़ादी की तलाश
के संघर्ष के बारे में पढ़ो तो चित्रों पर भी
ध्यान देना। उनमें तुम्हें उन तमाम स्त्रियों
और पुरुषों की छवियाँ दिखेंगी जिन्होंने
अमरीका के नागरिक अधिकार आन्दोलन
के दौरान भेदभाव और पूर्वाग्रहों की बेड़ियों
को तोड़ने के लिए अपने जीवन समर्पित
किए थे। कथा के अन्त में तुम इन लोगों
के बारे में भी पढ़ सकोगे।



अगासु तेन्दुआ राजा का आख्यान

पुनर्कथन व चित्र: रिक ड्युप्रे
भाषान्तर: पूर्वा याज्ञिक कुशवाहा



परिचय

अफ्रीकी लोककथा में कुछ बड़ा खास होता है। उसे हर बार जब भी सुनाया जाता है, वह कहानी कुछ अलग हो सकती है। वह कथा सुनाने वाले के मिजाज़ के हिसाब से बदल सकती है। उसे जहाँ सुनाया जा रहा है, उस स्थान के हिसाब से भी बदल सकती है। ये बदलाव लोककथाओं को जीवन्त और उत्तेजक बनाते हैं।

अगासु की कथा भी कई तरह से सुनाई जा सकती है, पर उन सभी में आपको एक बात समान मिलेगी: अगासु एक ताकतवर व्यक्ति था और उसके पूर्वज भी बेहद शक्तिशाली थे। यह कथा पश्चिमी अफ्रीका में सुनाई जाती है। यानी उस इलाके में जो आज घाना, टोगो, ओर बेनिन देशों में आते हैं। अफ्रीका के इस भाग में कथाएं दो समूहों में बांटी जाती हैं - *हेहो और व्हेनोहो*। *हेहो* कथाएं उन लोगों के बारे में होती हैं जिनका कोई अस्तित्व नहीं था और वे ऐसी घटनाओं का जिक्र करती हैं, जो कभी घटी ही नहीं थी। अर्थात् वे पूरी तरह काल्पनिक होती हैं। *व्हेनोहो* कथाओं को ऐतिहासिक दस्तावेज माना जाता है। मतलब ये उन लोगों पर आधारित होती हैं जो वास्तव में थे और ये उन घटनाओं का जिक्र करती हैं जो दरअसल घटी थीं। अगासु की कथा *व्हेनोहो* है।

अफ्रीका में, जैसे शेष दुनिया में भी, कई लोगों के साथ अन्यायपूर्ण बरताव किया जाता था, और उन्हें अपने मानव-अधिकार पाने के लिए मशक्कत करनी पड़ती थी। अगासु की कथा ऐसे ही एक संघर्ष की कहानी है।



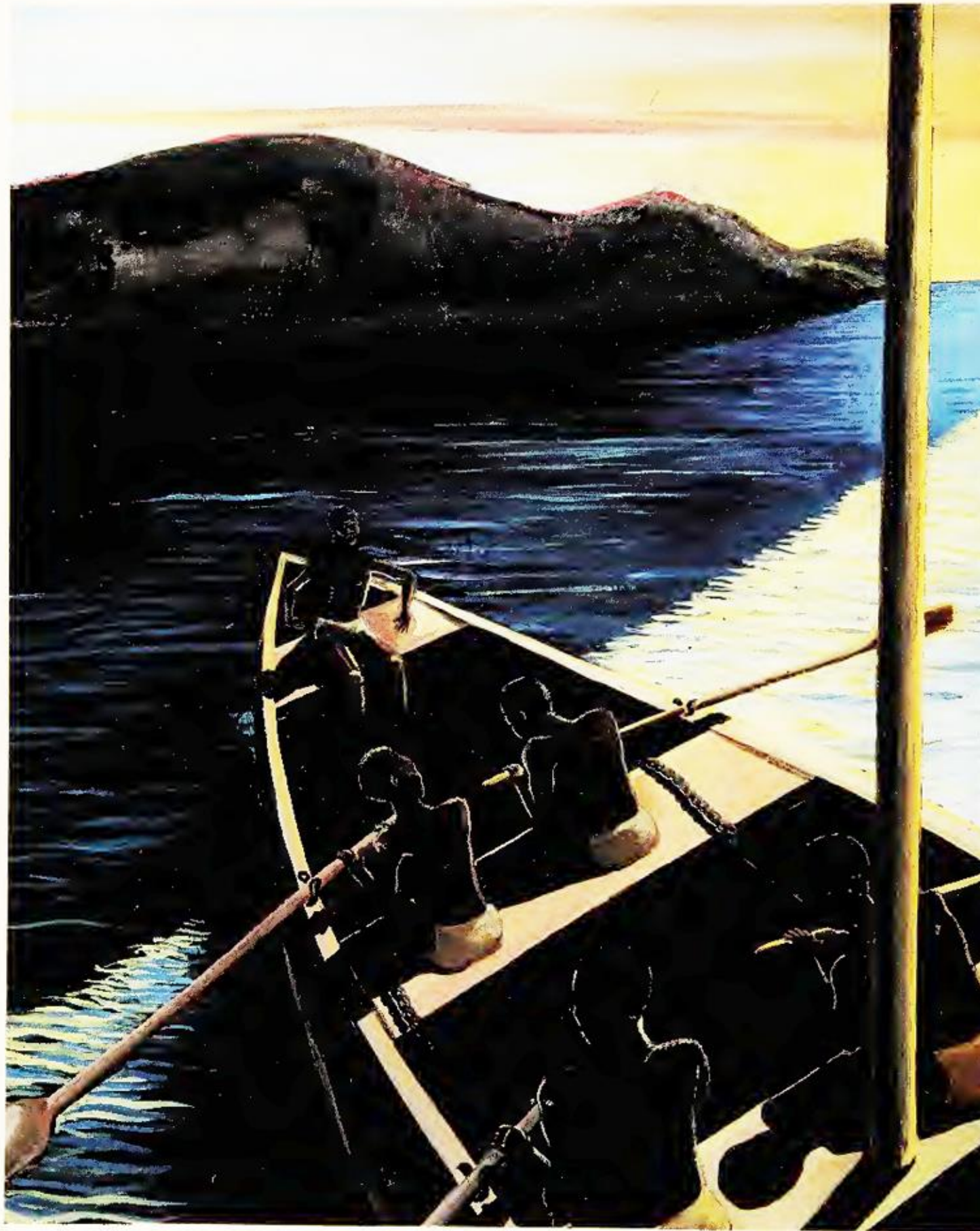
मेरे माता-पिता के लिए, मैं आप दोनों से प्यार करता हूँ।



बात बहुत पुरानी भी नहीं है, कि अफ्रीका के भव्य तट के आस-पास एक चौड़ी खाड़ी में एक बड़ी नाव तैर रही थी। उस मछली पकड़ने वाली नाव के अगले हिस्से में मुख्य मध्यस्थ (लैपटॉट) खेने वालों को पतवार को एक लय में चलाने का संकेत देने के लिए अपनी चाबुक फटकार रहा था।

उस बड़ी-सी नाव के खेवैया गुलाम थे। उन्हें नाव को तेज़ी से चलाने के लिए कड़ी मेहनत करने पर मजबूर किया जाता था।

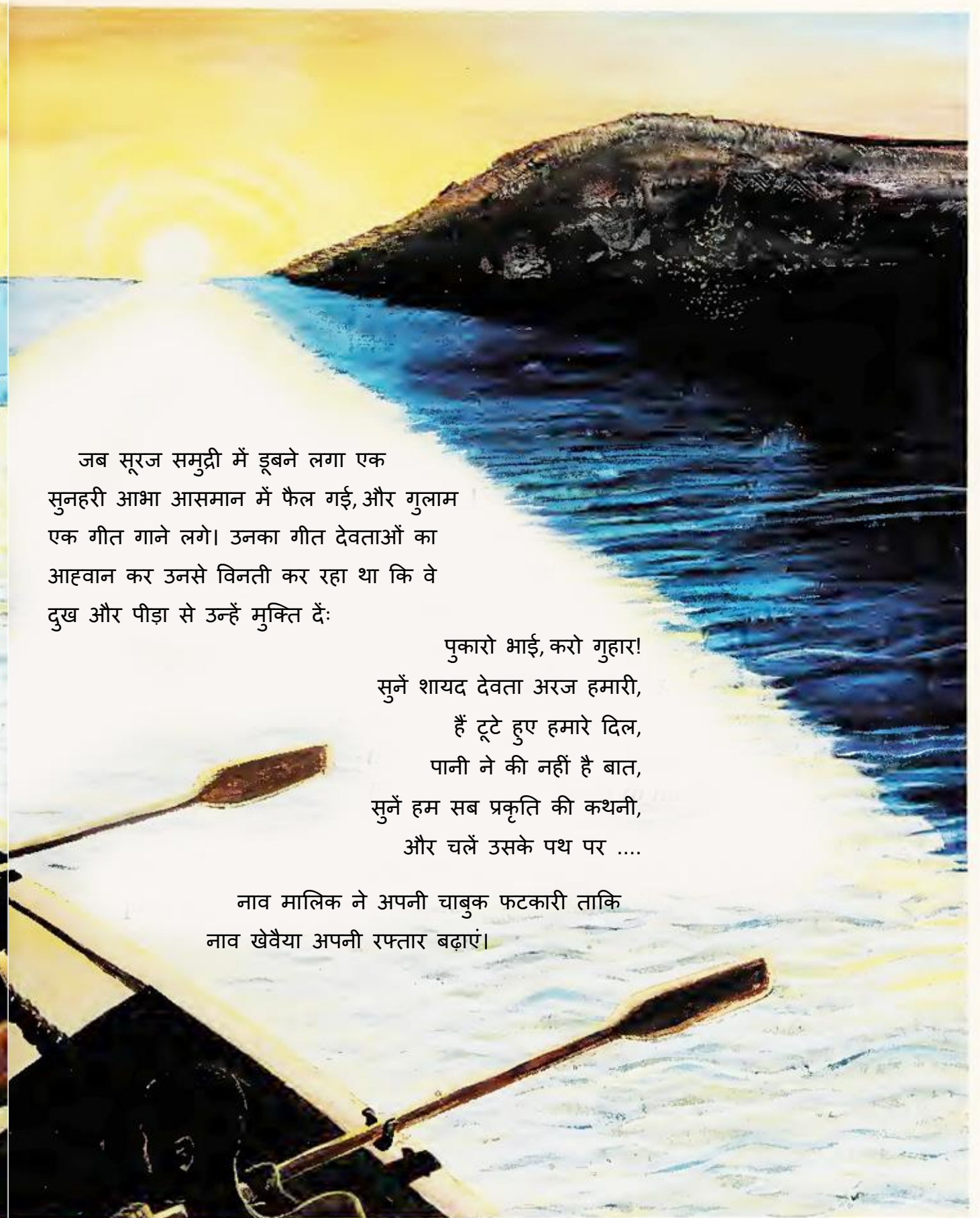
दिन-रात ये गुलाम अपनी बेड़ियों से मुक्त होने को तरसते थे, जो उन्हें नाव के तख्तों से जकड़े रखती थीं। हालांकि वे सब बन्दी थे, वे आज़ाद इन्सान होने की भावना को भूले नहीं थे।

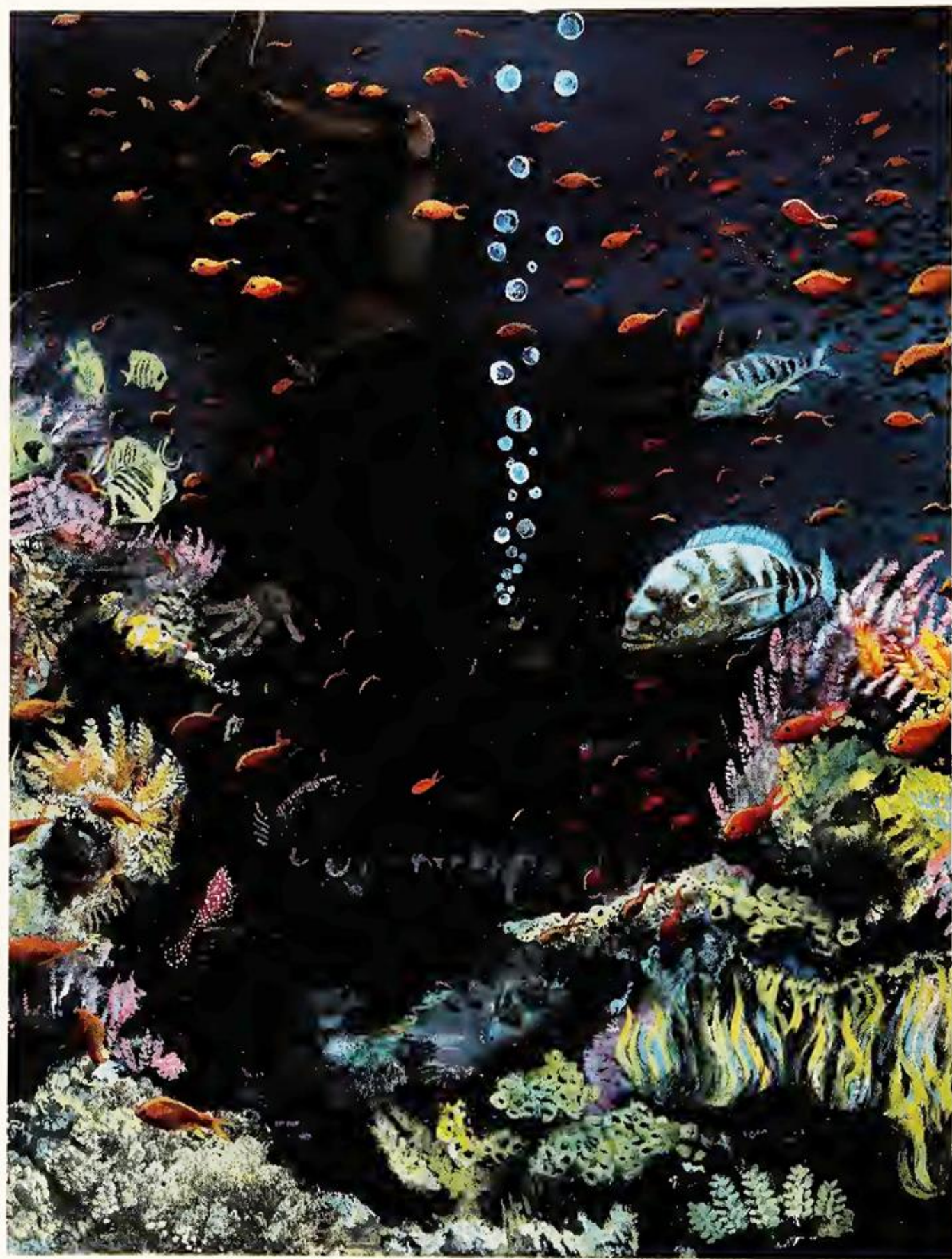


जब सूरज समुद्री में डूबने लगा एक
सुनहरी आभा आसमान में फैल गई, और गुलाम
एक गीत गाने लगे। उनका गीत देवताओं का
आह्वान कर उनसे विनती कर रहा था कि वे
दुख और पीड़ा से उन्हें मुक्ति दें:

पुकारो भाई, करो गुहार!
सुनें शायद देवता अरज हमारी,
हैं टूटे हुए हमारे दिल,
पानी ने की नहीं है बात,
सुनें हम सब प्रकृति की कथनी,
और चलें उसके पथ पर

नाव मालिक ने अपनी चाबुक फटकारी ताकि
नाव खेवैया अपनी रफ्तार बढ़ाएं।



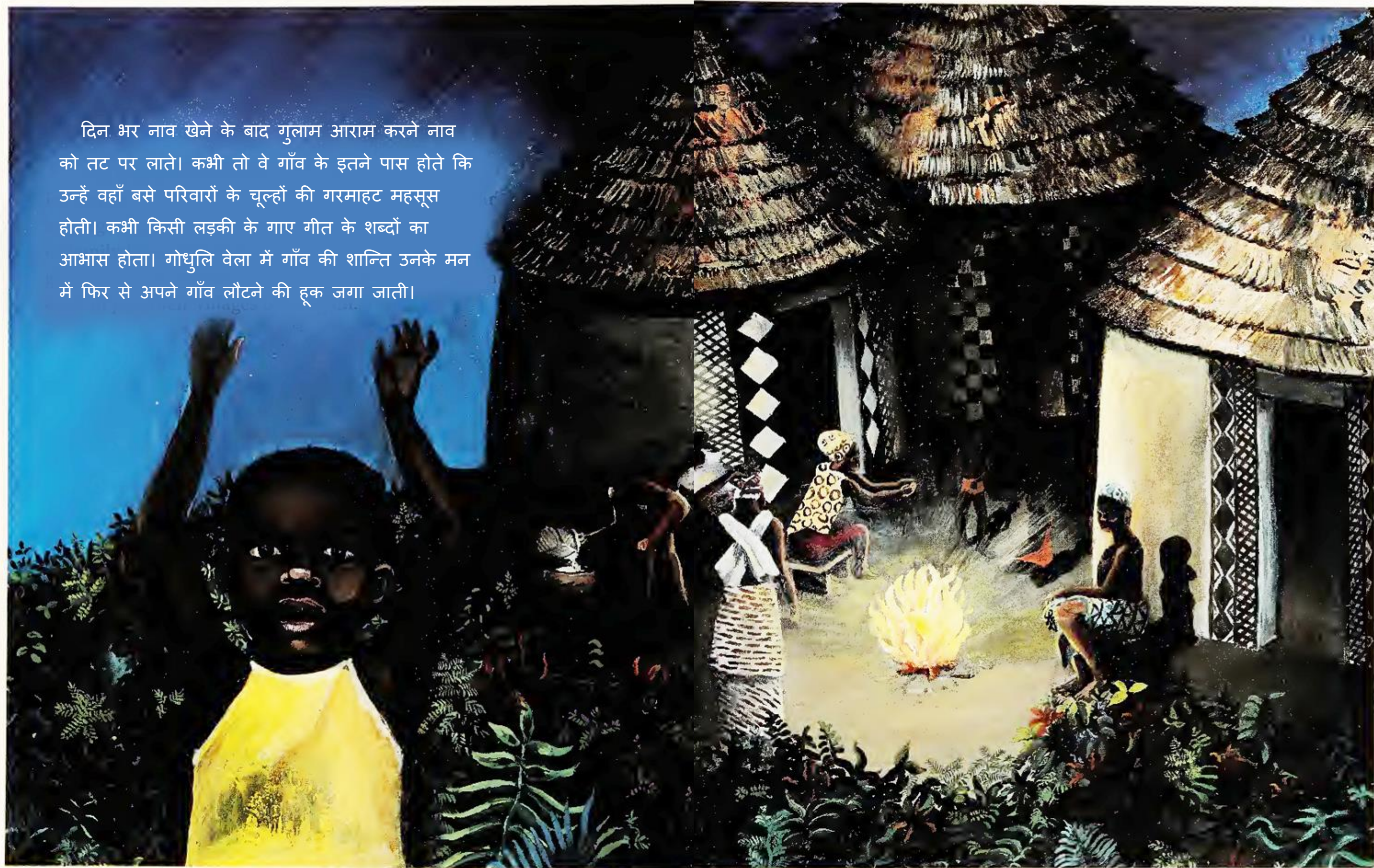


उन गुलामों में एक नौजवान था जिसका नाम अगासु था। उसे उसके परिवार से जुदा कर दिया गया था। जब वह छोटा लड़का ही था उसे परिवार से छीन कर गुलाम के रूप में बेच दिया गया था। जब वह छोटा था पतवार चलाने की उसमें ताकत नहीं थी, सो उससे जल-कूकर का काम करवाया जाता था। मतलब वह ऊदबिलाव की तरह पानी में गोता लगाता और खाड़ी के तल में जाकर तैरता, ताकि वह बड़ी मछलियों को जाल काटने से रोक सके। अगासु को पानी में गोता लगाने की यह थोड़ी-सी आज़ादी बेहद रास आती थी। पर जल्द ही वह इतना ताकतवर हो गया कि वह खेवैयों की कतार में अपनी जगह ले सके।

अगासु नाम का मतलब होता है तेन्दुआ। दूसरे गुलामों को उसके नाम पर कतई अचरज नहीं होता था, क्योंकि उन्होंने अगासु में तेन्दुओं की सी ताकत देखी थी। उसकी आँखें काली और गहरी थीं और उनमें प्रचंडता झलकती थी। उसका शरीर तेन्दुए-सा बलिष्ठ था, इतना बलिष्ठ कि वह नाव मालिक के चाबुक के वार झेल सकता था।



दिन भर नाव खेने के बाद गुलाम आराम करने नाव को तट पर लाते। कभी तो वे गाँव के इतने पास होते कि उन्हें वहाँ बसे परिवारों के चूल्हों की गरमाहट महसूस होती। कभी किसी लड़की के गाए गीत के शब्दों का आभास होता। गोधुलि वेला में गाँव की शान्ति उनके मन में फिर से अपने गाँव लौटने की हूक जगा जाती।



गाँव में लोग आज़ाद थे। वे अपने खेतों और जंगलों
में काम करने के बाद फक्र से सिर उठाए चलते थे।

उनके गर्वीले शरीर धरती पर ऐसे बढ़ते
मानो मक्की के खेत को हवा हिलाडुला रही हो।





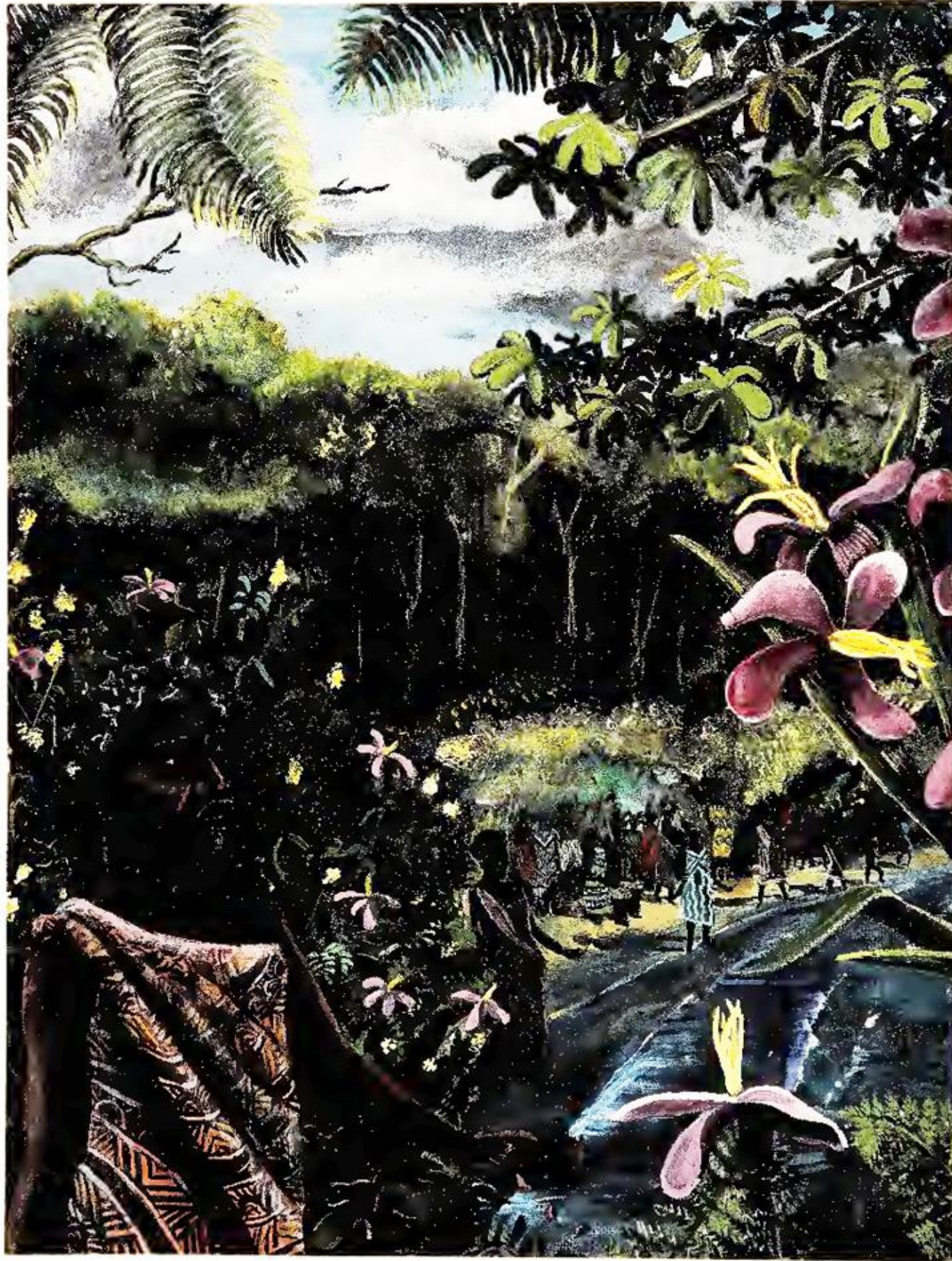
एक ताराहीन रात मंद हवा बहने लगी और नाव के मालिक ने गुलामों को पाल तानने और कुछ सुस्ताने की इजाज़त दे दी। अगासु नींद के आगोश में समाने ही वाला था, कि पानी के उस पार से आती एक आवाज़ ने उससे कुछ कहा। “मैं तुम्हें जानता हूँ,” आवाज़ ने कहा। “क्या तुमने मेरी पुकारें नहीं सुनीं? मुझे तुमसे कुछ ज़रूरी बात कहनी है।”

अगासु ने सोचा कि वह सपना देख रहा है। पर तब अचानक एक लहर उठी जिसने उसका कपाल धो डाला। अगासु को अहसास हो गया कि समुद्र ने ही उससे बात की है। उसका दिल ज़ोरों से धड़कने लगा। समुद्र के देवता ने उससे बात करना क्यों चुना होगा? अगासु समुद्र को आगे कुछ और कहते सुनना चाहता था। पर समुद्र ने उस रात और अगली कई रातों तक कुछ कहा ही नहीं।

आखिरकार कई दिनों तक लगातार पतवार खेते जाने के बाद हवा फिर बही और खेवैयों को पाल के सहारे नाव बहने दे, सुस्ताने की छूट फिर से मिली। अगासु ने अपना सिर नाव पर टिकाया और समुद्र को सुनने की कोशिश की।

“सुनो,” समुद्र फुसफुसाया। अगासु की आँखें उत्तेजना में फैल गईं।

“सुनो, मैं तुम्हें एक ताकतवर परिवार की कहानी सुनाता हूँ। मेरे परिवार की।”



“मेरी कहानी कई सालों पहले के एक बसन्त के पहले दिन शुरू होती है। उस दिन सभी गाँव वाले मेरे लिए भेंट लेकर तट पर आए। सब ने खुशी के गीत गाए। सारंगियों, बाँसुरियों और ढोलों ने हवा में संगीत का छिड़काव किया। स्त्रियों ने खुद को सुन्दर फूलों से सजाया और लहरों पर पंखुड़ियाँ बिखेरीं।

“सभी स्त्रियाँ सुन्दर थीं, पर एक ने मेरा ध्यान खींचा। जब मैंने उसकी गहरी भूरी आँखों में झांका तो मुझे उसकी अन्दरूनी अच्छाई चमकती नज़र आई। मैं उसके प्रेम में पड़ गया, और उससे मेरी पत्नी बनने का आग्रह किया।”

उस रात समुद्र ने अगासु को यह सब बताया।





अगासु समुद्र की कहानी आगे सुनने को आतुर था। पर कहानी आगे तब ही जारी रखी जा सकती थी जब हवा नाव को आगे बढ़ा ले जाती।

उन शान्त, हवाहीन रातों को जब गुलामों को जबरन पतवार चलानी पड़ती, अगासु अब अपने दुखते शरीर की बात नहीं सोचता था। वह समुद्र की जादुई कहानी की बात सोचता था। वह खुश था, जितना वह एक अर्से से नहीं रहा था। उसे लगता कि वह खास है, क्योंकि समुद्र ने उससे बात करना जो चुना था। उसे भरोसा था कि हवा के लौटने पर समुद्र भी लौटेगा।

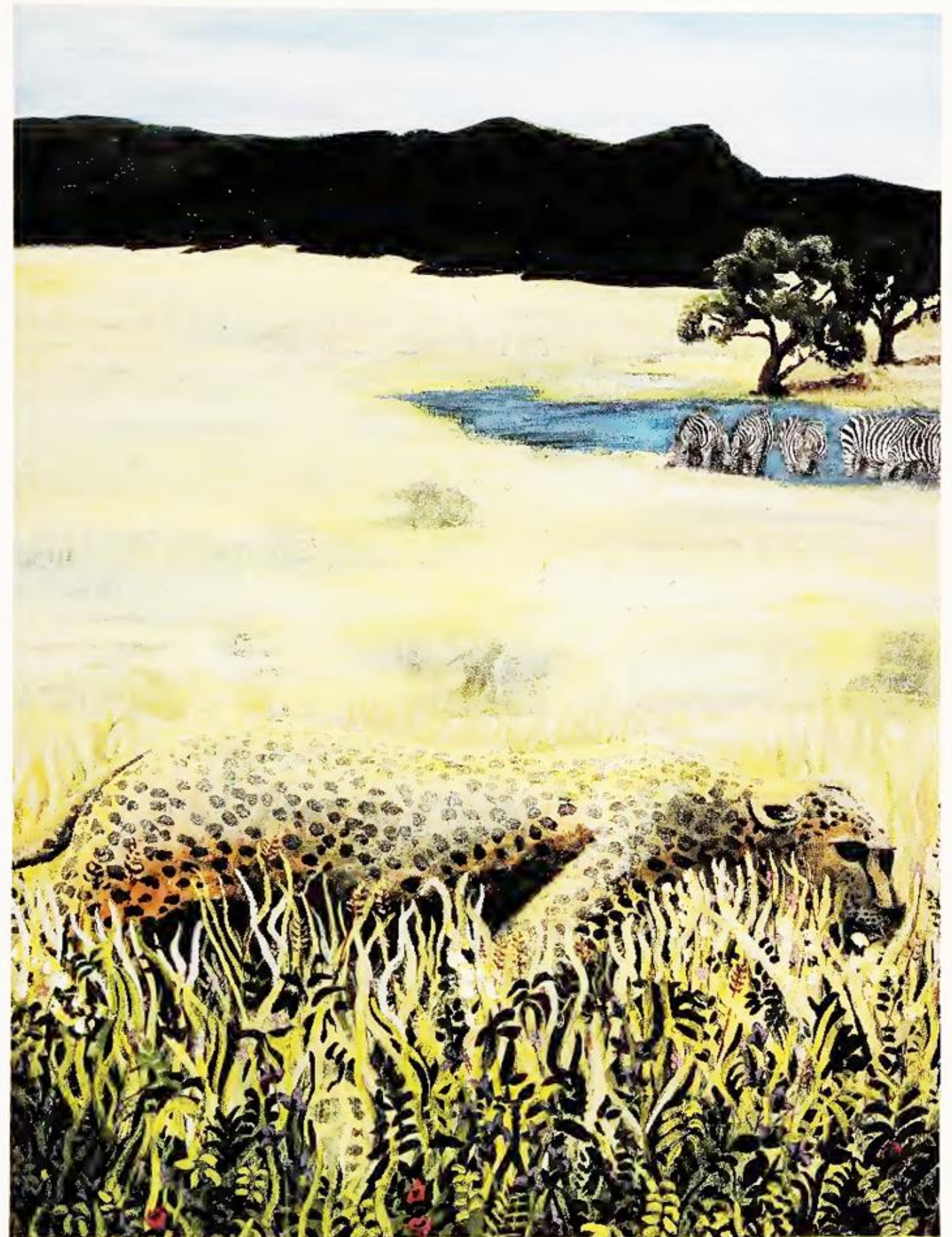
और बेशक हवा लौटी और पाल ताने गए। नाव की रस्सियाँ हवा में धीरे-धीरे फड़फड़ाईं और समुद्र की कोमल आवाज़ लौटी। “सुनो,” समुद्र ने पुकारा। “मुझे तुम्हें और भी बहुत कुछ बताना है। बसन्त उत्सव में मैंने उस सुन्दर स्त्री से बात की और तय किया कि हम गाँव के पास चट्टानी खाड़ी में मिलेंगे। वहाँ जिसे अब विवाह की खाड़ी कहा जाता है। वहाँ वह मेरी पत्नी बनी।”

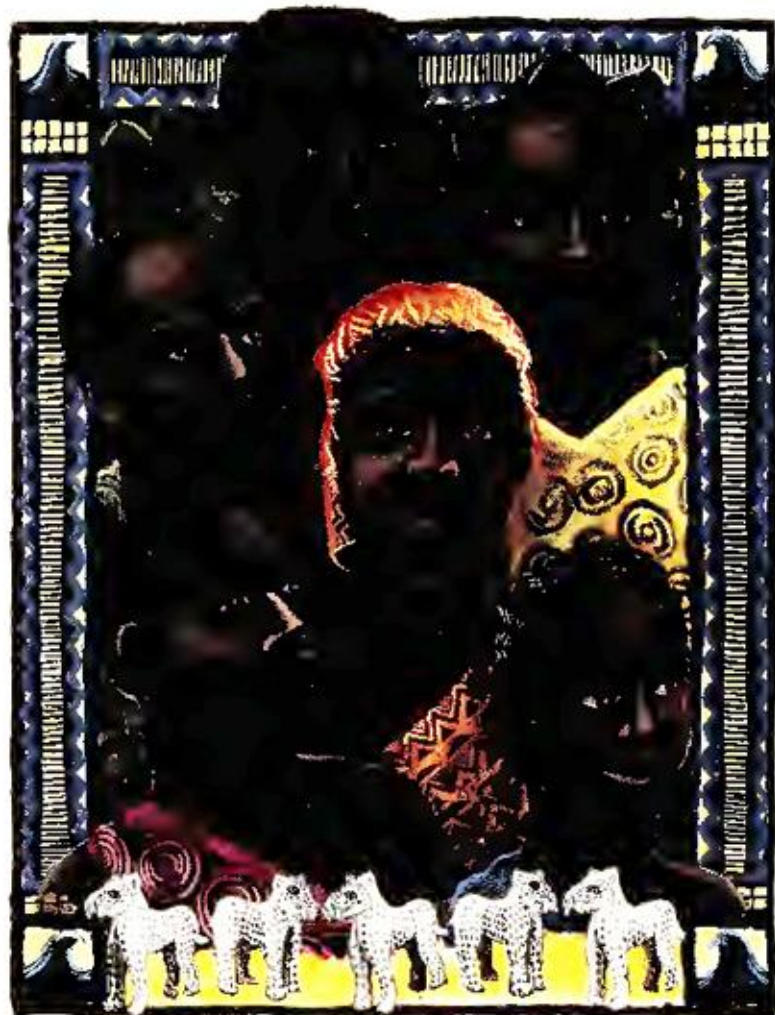


“हम बेहद खुश थे। तब और भी खुश हुए जब हमारा एक बेटा हुआ। हमारा बेटा बेहद खूबसूरत था, जैसे देवताओं के बच्चे होते हैं। वह एक नन्हा तेन्दुआ शावक था। उसकी आग-सी पीली खाल पर चमकीले काले धब्बे थे। उसकी आँखें गहरी थीं और गहरे समुद्र-सी चिलक मारती थीं।

“मेरे रत्न-सी आँखों वाले बेटे ने अडजा कबीले के राजा टाडो की बेटी से शादी की। तुम, अगासु इस मिलन के वंशज हो। तुम तेन्दुए के वंशज हो, इसलिए तुम मेरे परिवार के सदस्य हो।”

अगासु क्या कहे उसे सूझा ही नहीं। उसने जो कुछ सुना उस पर उसे विश्वास ही नहीं हो रहा था। सोचो ज़रा, गुलाम अगासु देवताओं का वंशज था!





“अगासु तुम अपने कबीले के लोगों के लिए बहुत महत्वपूर्ण हो, क्योंकि तुम तेन्दुए के आखिरी वंशज हो,” समुद्र ने समझाया। “तुममें अपनी तकदीर से मिलने का साहस होना चाहिए, क्योंकि तुम्हें एक पुरानी भविष्यवाणी को पूरा करने के लिए तैयार होना होगा। भविष्यवाणी यह है कि समुद्र तेन्दुए के असली पुत्र को उसके लोगों को लाकर सौंपेगा, जहाँ वह अपना जायज़ स्थान लेगा। तुम ही तेन्दुए के वह असली पुत्र हो अगासु, और तुम्हारे लोग आतुरता से तुम्हारे आने की बाट जोह रहे हैं!”



अगासु पशोपेश में पड़ गया। वह अपने लोगों तक पहुँचेगा कैसे, वह तो दूसरे नाव खेवैयों के साथ बेड़ियों से जकड़ा बैठा है? पर उसे इस पर सोचने का ज़्यादा वक्त न मिला, क्योंकि जल्द ही रात नाव को खेने के गर्म दिन में बदल गई। नाव मालिक की चाबुक कई गुलामों की पीठ पर सट्ट-सट्ट बरसी। गुलाम पतवार चलाते हुए अपने दुख का गीत गाने लगे:

पुकारो भाई, करो गुहार!
सुनें देवता अरज हमारी,
हैं कमज़ोर हमारे दिल,
शर्तिया बोलेगा किसी दिन पानी,
सुननी है हमें समुद्र की बात,
सुनें हम सब प्रकृति की कथनी,
और चलें उसके पथ पर

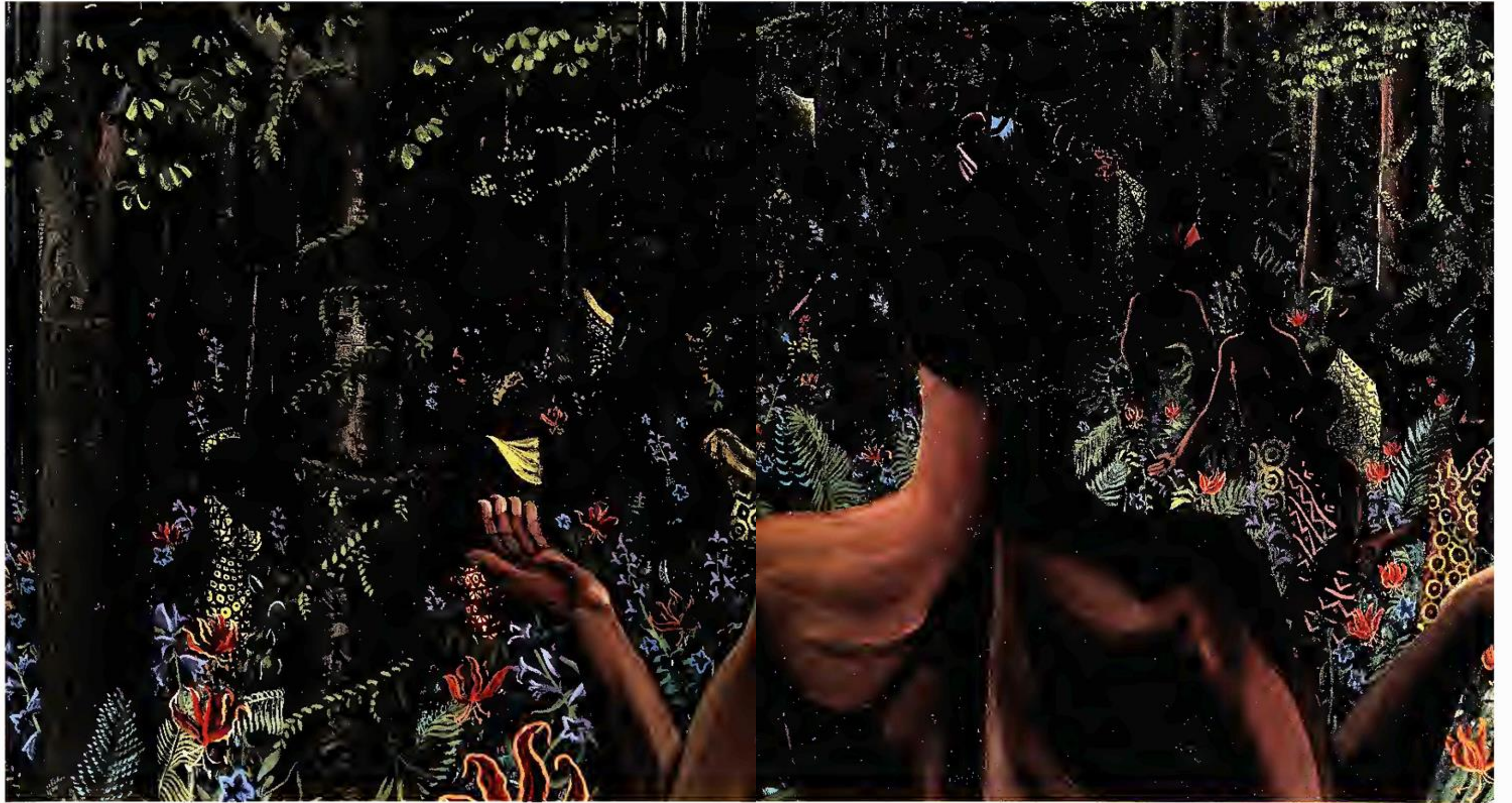
पानी ने अगासु से बात की थी ठीक जैसे नाविकों के गीत ने भविष्यवाणी की थी! वह समझ चुका था कि समुद्र का कहा मानने का, अपनी बेड़ियाँ तोड़ने का समय आ चुका है। उसे अपने शरीर में तेन्दुए की ताकत महसूस होने लगी थी। उसे पता था कि अब वह गुलाम नहीं बना रह सकता।





उसी समय एक तूफान उठा। हवाएं चक्रवात में बदलीं और समुद्र पगला कर गरजने लगा। “हिम्मत बनाए रखना अगासु,” समुद्र ने पुकार कर कहा। अचानक आसमान में बिजली कड़की और आग के गोले की सी ताकत से वह नाव पर गिरी। जिन बेड़ियों ने अगासु को जकड़ रखा था, वे अनायास ही पिघल गईं।

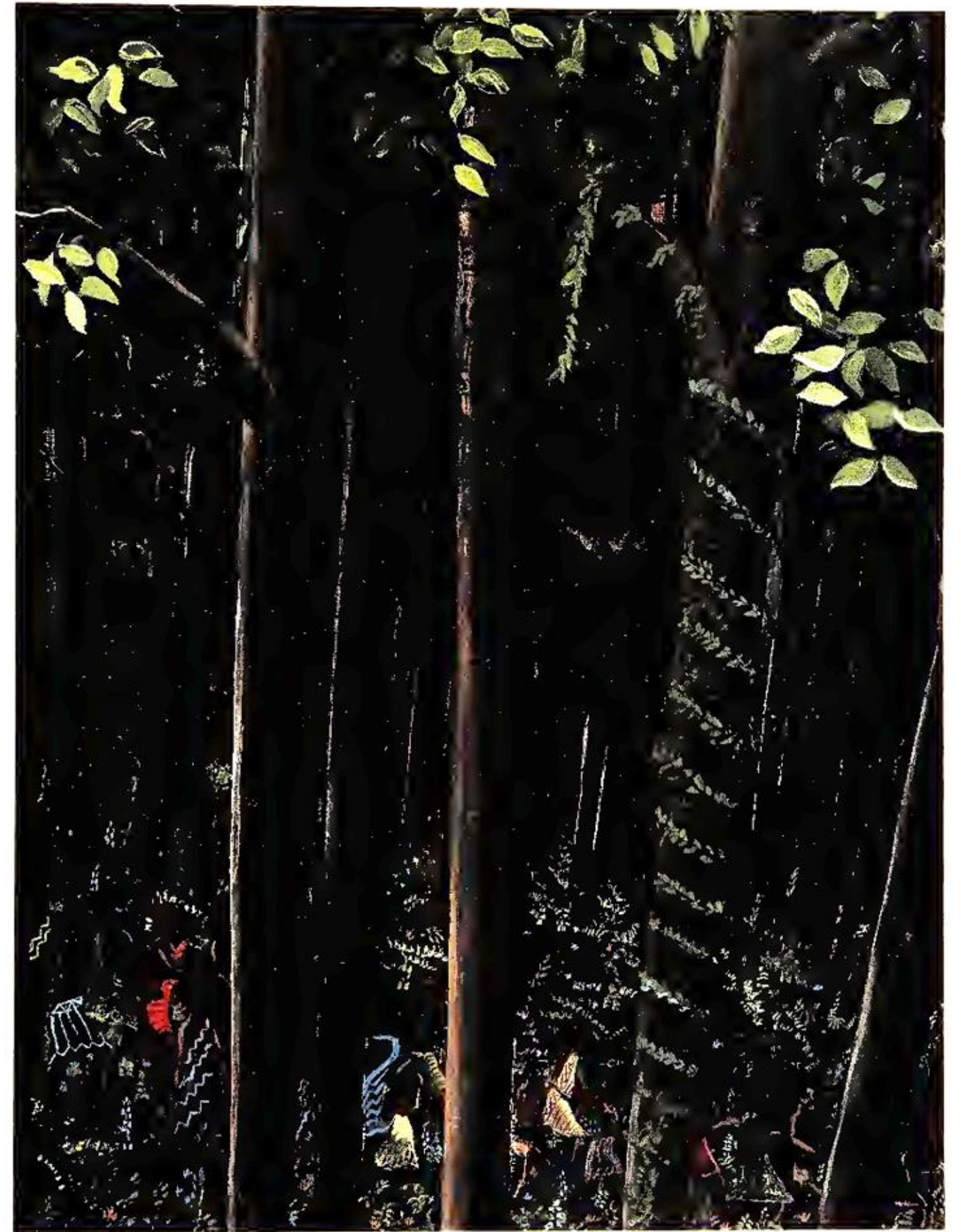
समुद्र अगासु को लहरों पर बैठा उसे उसके पूर्वजों के देश ले गया। तट पर उतारने पर समुद्र का आखिरी संदेश था, “तुम्हारे परिवार के बारे में जो कुछ मैंने बताया उसे याद रखना। तुममें देवताओं की शक्ति है, तेन्दुए का बल है, और तुम्हारे लोगों की अच्छाई है। इन उपहारों का उपयोग करना और प्रकृति के पथ पर चलना। अब जाओ अपने लोगों की अगुवाई करो।”

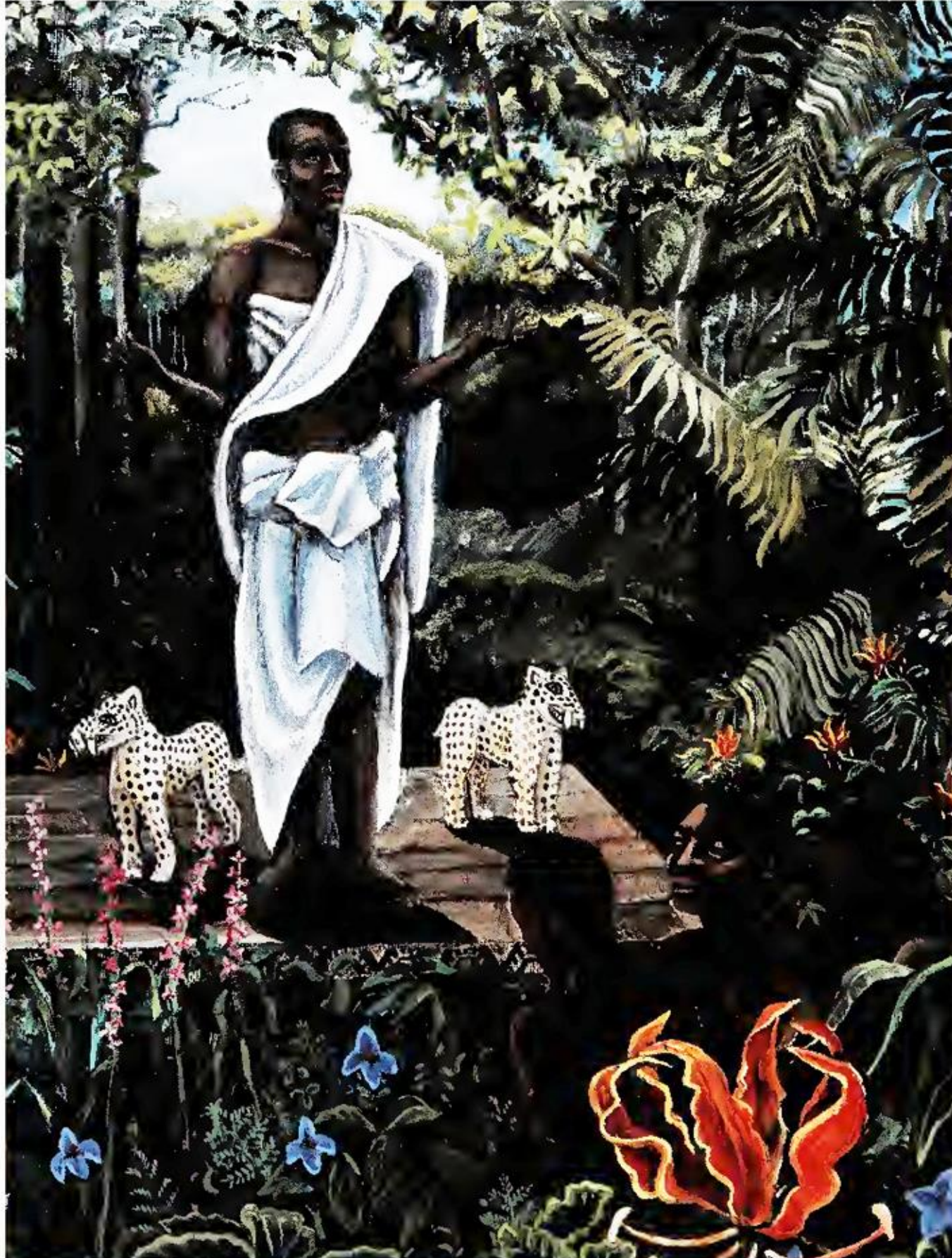


नए तट पर पहुँचते ही अंधकार और तूफान एक परदे की तरह हट गए। और सूरज ने हरे-भरे जंगल और सुन्दर फूलों की दुनिया उजागर की। अगासु उस प्रदेश का सौन्दर्य देख हैरत में पड़ गया।

लोग - अगासु के लोग - जंगल से बाहर निकलने लगे। वे तेन्दुए के असली पुत्र का स्वागत करने आए थे। जैसा भविष्यवाणी ने वादा किया था, समुद्र उनके असली राजा को उन तक पहुँचा गया था। लोग प्रसन्न थे। वे स्वागत करने उसके गिर्द जमा हुए और उसे गाँव की ओर ले गए।

रास्ते में बड़े-बुजुर्गों ने अगासु को बताया कि उनके इलाके में बुरे दिन चल रहे थे। लोग कड़ी मेहनत करने पर मजबूर किए जाते थे, पर फिर भी गरीब और भूखे थे। पर राजा और उसके दो बेटे अमीर होते जा रहे थे और उनके पास खाने को भी भरपूर था। वे प्रजा से क्रूरता से पेश आते और जो भी शिकायत करता या उनके लिए मशक्कत करने से इन्कार करता उसे सख्त सज़ा देते थे। सो तेन्दुए राजा की वापसी लोगों की खुशहाली की एकमात्र उम्मीद थी।

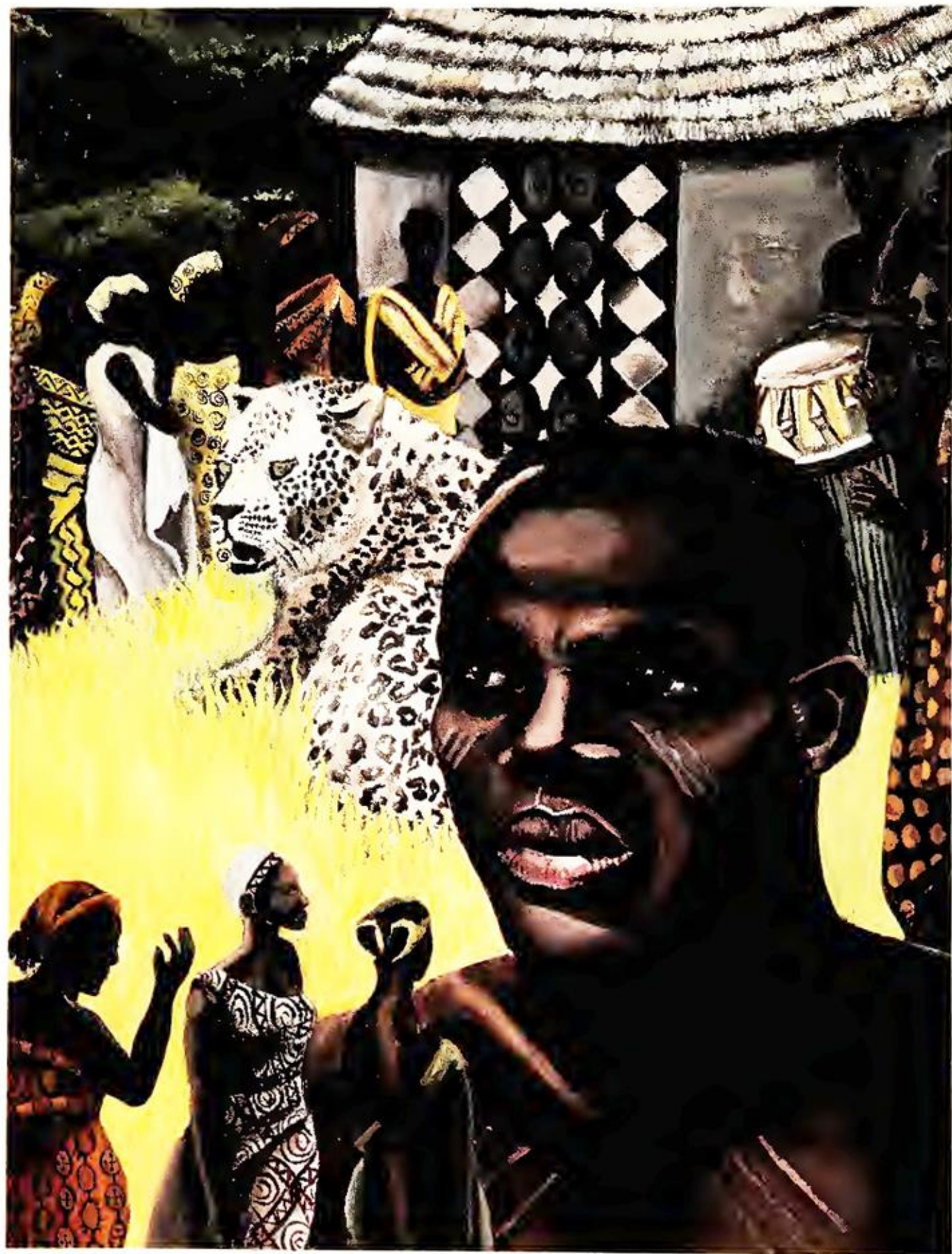




लोग अगासु को गाँव के बीच बने चबूतरे तक ले आए। “अपना स्थान ग्रहण करो अगासु!” वे बोले। अगासु चबूतरे पर चढ़ा और हाथी दाँत से बने दो तेन्दुओं के बीच जा खड़ा हुआ। लोगों ने जयकार की। लोगों के ध्यान का केन्द्र बन अगासु असहज हो गया। अगासु राजा बनने को तैयार था, पर वह यह भी जानता था कि उसका पहला दायित्व दुष्ट शासकों का समाना करना होगा। राजा और उसके दोनों बेटों को अगासु के सामने गुलामों की तरह बांध कर लाया गया।

भीड़ चीखी और उन क्रूर पुरुषों का मौखल उड़ाने लगी। अगासु ने लोगों को इशारे से चुप करवाया। तब उसने तीनों पुरुषों से पूछा कि वे अपनी सफ़ाई में क्या कहना चाहते हैं। राजकुमारों में जो छोटा था उसने अगासु का अपमान किया, कहा “तुम ढोंगी हो। तेन्दुआ राजा के शरीर पर उसके परिवार के निशान होते। पर तुम, तुम्हारे पास सिर्फ उसका नाम है!”

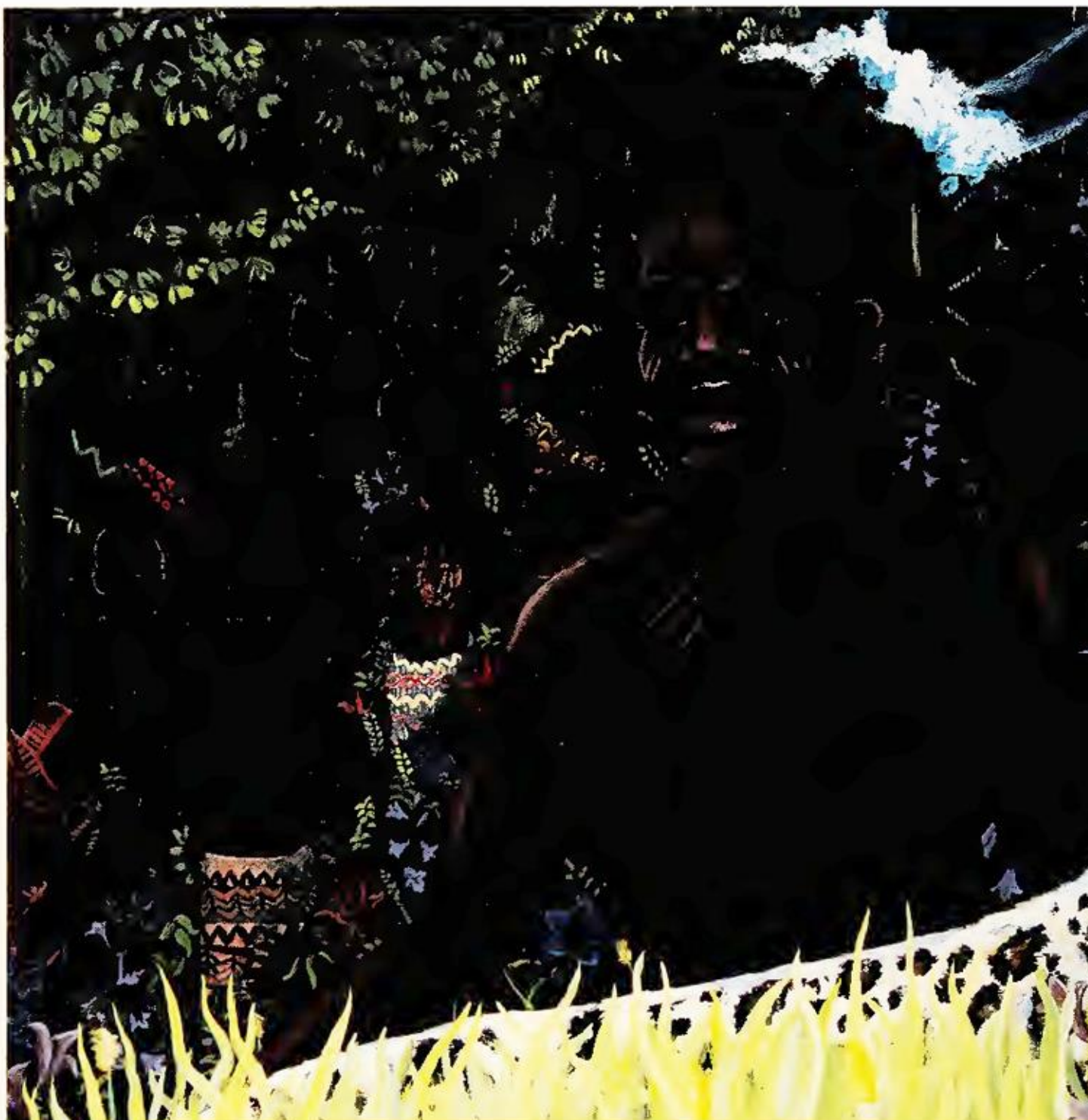




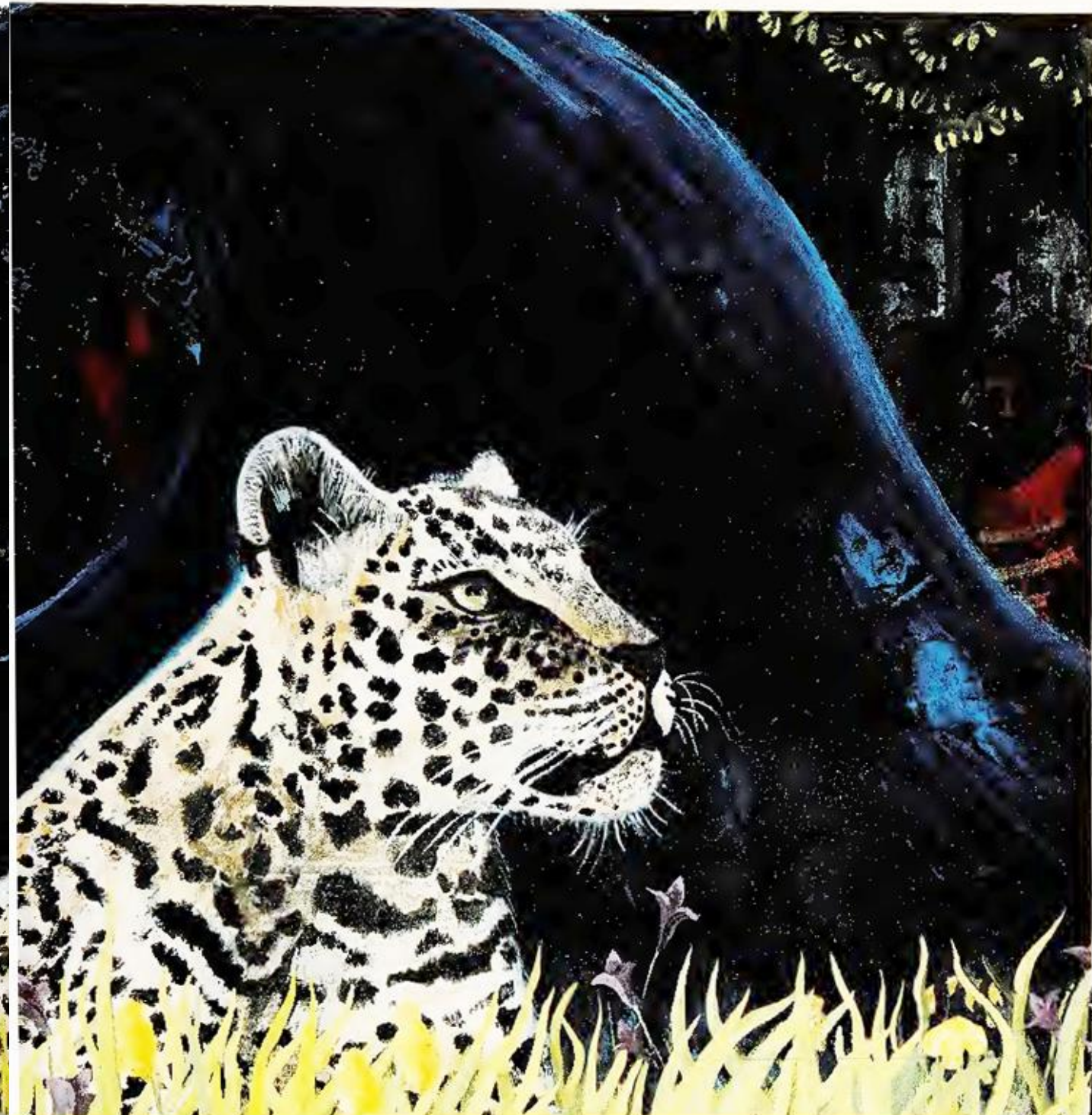
राजकुमार का आरोप सुन सामने जमा भीड़ सकते में आ गई। अगासु ने लोगों के चुप होने का इन्तज़ार किया। और तब कहा, “यह सच कह रहा है। मेरे शरीर पर मेरे परिवार के कोई निशान नहीं है।” तब अगासु अपने हाथ चेहरे और छाती तक लाया। ढोलों की थाप हवा में पसर रही थी। भीड़ यह देख स्तब्ध रह गई कि अगासु की चिकनी काली चमड़ी पर अब पंजों के निशान थे। राजकुमार घबरा कर पीछे हट गया।

अगासु जानता था कि लोग उम्मीद कर रहे थे कि वह क्रूर राजा और उसके बेटों को कड़ी सज़ा देगा। कुछ तो चाहते थे कि उन्हें मौत के घाट उतार दिया जाए।

पर अगासु ने समुद्र के अंतिम आदेश के बारे में सोचा, जो उसके परिवार की विरासत को याद करने के बारे में था। उसे अपने ताकतवर पिता समुद्र, बलिष्ठ भाई तेन्दुए और रहमदिल माँ की आवाज़ें सुनाई दीं। माँ की आवाज़ सबसे सशक्त थी, जो अगासु से कह रही थी, “मेहरबान बनो, क्योंकि तुम जानते हो कि पीड़ा क्या है।” अगासु समझ गया कि उसे क्या करना है।



“मेरी बात सुनो, मेरे लोगों!” अगासु ने दृढ़ आवाज़ में आदेश दिया।
 “इन तीनों को इनके बंधनों से आज़ाद कर दो, जैसे मुझे आज़ाद किया गया।
 इन्हें कोई नुकसान न पहुँचाए।” जिन तीन लोगों ने इलाके में दुख और पीड़ा
 फैलाई थी, उनसे अगासु ने कहा, “तुमने जो बुरे काम किए उनके लिए तुम्हें माफ़
 किया जाता है। मैं नहीं जानता कि तुम्हारे कदम तुम्हें कहाँ ले जाएंगे,



पर सुनो, भाइयों, तुम्हारे अन्दर भी शक्ति, ताकत और अच्छाई है।
 इन उपहारों को इस्तमाल करो और प्रकृति की दिखाई राह पर चलो।
 अब यहाँ से जाओ और अपना रास्ता तलाशो।”

ये आदजा कबीले के अगासु के शासन काल के पहले शब्द थे,
 और यह उसका पहला कृत्य था।

इस किताब के चित्र अगासु और उसके आज़ाद होने के संघर्ष को दर्शाते हैं। पर चित्रों को करीब से, ध्यान से देखिए तो आपको उन लोगों के चेहरे नज़र आएंगे जो एक दूसरे संघर्ष से - अमरीकी नागरिक अधिकार आन्दोलन से - जुड़े थे। इन लोगों ने हर दिन घृणा और असमानता झेली थी, महज इसलिए क्योंकि वे अफ्रीकी-अमरीकी थे। उन्होंने जिस हिम्मत और दृढ़ता का प्रदर्शन किया उससे लगता है कि वे भी तेन्दुए के वंशज हो सकते थे। इन महान लोगों में से कुछ के जीवन का संक्षिप्त वर्णन नीचे किया जा रहा है:

डब्ल्यू. ई. बी. ड्युबोइस का जन्म नाम विलियम एडवर्ड बर्गहार्ट ड्युबोइस था। वे 23 फरवरी 1868 को ग्रेट बैरिंगटन, मैसाच्युसैट्स में पैदा हुए थे। वे असाधारण लेखक, विद्वान, और नागरिक अधिकार नेता थे, जिन्होंने अफ्रीकी-अमरीकियों को अपने बच्चों को शिक्षित करने और नस्लवाद के विरोध में अपनी आवाज़ उठाने को प्रेरित किया। 1909 में उन्होंने नैशनल एसोसिएशन फॉर एडवान्समेंट ऑफ कलर्ड पीपल (एनएएसीपी) की स्थापना में मदद की। यह संस्था नस्ली भेदभाव से लड़ने के लिए कानूनी कदम उठाती थी और सामाजिक कार्यक्रम चलाती थी।



आइडा बी. वेल्स पैदाइश गुलाम थीं। उनका जन्म 16 जुलाई 1862 में होली स्प्रिंग्स, मिसिसिपी में हुआ था। उनके जन्म के दो महीने बाद ही मुक्ति घोषणा हुई और गलामी को गैर-कानूनी करार दिया गया। सोलह वर्ष की आयु में वे शिक्षिका बनीं, पर अपना खाली समय उन्होंने हमेशा नस्लवाद के विरोध में लिखने और बोलने में बिताया। 1891 में आइडा ने शिक्षण को छोड़ पत्रकारिता को अपनाया और सक्रियकर्मी बनीं। उन्होंने अपना शेष जीवन दक्षिण में अफ्रीकी-अमरीकियों की 'लिंगिंग' (भीड़ द्वारा गैर-कानूनी हत्या) का पर्दाफाश करने और उसका विरोध करने में बिताया। ड्युबोइस की तरह उन्होंने भी एनएएसीपी की स्थापना में योगदान दिया।



फ्रेडरिक डगलस का जन्म गुलाम के रूप में फरवरी 1817 में टैलबॉट काउन्टी, मेरीलैण्ड में हुआ था। जीवन के दूसरे दशक में आने के बाद डगलस गुलामी से निकल भागे और न्यू यॉर्क पहुँचे। उत्तर में पहुँचने के बाद वे गुलामी विरोधी आन्दोलन में सक्रिय हुए। नागरिक युद्ध के दौरान डगलस राष्ट्रपति लिंकन के सलाहकार बने और बाद में विभिन्न पदों पर सेवाएं देते रहे।



सैप्टिमा क्लार्क का जन्म 3 मई 1898 में चार्ल्सटन, साउथ कैरोलाइना में हुआ। उन्होंने शिक्षिका बनने का प्रशिक्षण पूरा किया और 1954 तक सरकारी शिक्षा व्यवस्था में काम करती रहीं। पर 1954 में उन्हें एनएएसीपी का सदस्य होने के नाम पर बर्खास्त कर दिया गया। उन्होंने अमरीका के पहले नागरिकता स्कूल की स्थापना की, ताकि शिक्षक भी वे तमाम कौशल पा दूसरों को सिखा सकें, जिनकी ज़रूरत मतदाता के रूप में अपना पंजीकरण करवाने के लिए पड़ती थी। (उस समय अफ्रीकी-अमरीकियों को मतदान का हक पाने के लिए नागरिकता परीक्षा देनी पड़ती थी। यह परीक्षा इस तरह बनाई गई थी कि अफ्रीकी-अमरीकी उसमें उत्तीर्ण ही न हो सकें)। उनके अथक श्रम ने उन्हें नागरिक अधिकार आन्दोलन की 'राजमाता' (क्वीन मदर) की उपाधि दिलवाई।



रोज़ा पार्कस् का जन्म 4 फरवरी 1913 में टस्कगी, अलाबामा में हुआ था। उन्होंने अपना जीवन नागरिक अधिकार आन्दोलन को समर्पित किया। उनको खास तौर से इसलिए याद किया जाता है क्योंकि 1 दिसम्बर 1955 में उन्होंने बस में यात्रा करते समय अपनी सीट एक गोरे यात्री को देने से इन्कार कर दिया। इस गुनाह पर उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। पार्कस् के इस साहसी कृत्य ने मॉंटगोमरी में बस के बहिष्कार का आन्दोलन शुरू किया, जिससे अंततः बसों में पार्थक्य का नियम खत्म हुआ।



फौनी लू हामर 8 अक्टूबर 1917 को मॉंटगोमरी काउंटी, मिसिसिपी में पैदा हुईं। क्योंकि उनका परिवार गरीब था, उन्होंने छह वर्ष पढ़ाई करने के बाद स्कूल छोड़ काम करना शुरू किया। 1961 में जब उन्होंने नागरिकता स्कूल में अपना नामांकन करवाया वे नागरिक अधिकार आन्दोलन से जुड़ गईं। अपना शेष जीवन उन्होंने मतदाता पंजीकरण करवाने और गरीबी के विरुद्ध लड़ने में बिताया।





मैल्काँम एक्स का जन्म नाम मैल्काँम लिटिल था। 19 मई 1925 में उनका जन्म एक बैप्टिस्ट पादरी के घर हुआ। बचपन में वे नशीले पदार्थ बेचते थे। 1946 में चोरी के जुर्म में उन्हें दस साल की सज़ा सुनाई गई। जेल में उनका परिचय काले मुसलमानों और उनके ब्लैक पावर मूवमेंट से हुआ। 1952 में पैरोल (अस्थायी सशर्त रिहाई) पर छूटने के बाद वे अफ्रीकी-अमरीकियों के मुखर रक्षक बन गए। नस्लवाद के खिलाफ जंग में हिंसा के उपयोग का समर्थन करने के कारण वे विवादों से घिरे, और उन्हें कालों और गोरों, दोनों ही की आलोचना का सामना करना पड़ा। 1965 में उनकी हत्या कर दी गई।



रॉबर्ट मोसेस 23 जनवरी 1935 में न्यू यॉर्क में पैदा हुए। पच्चीस वर्ष की उम्र में वे नागरिक अधिकार अन्दोलन से तब जुड़े जब उन्होंने स्टूडेंट नॉन-वायलेन्ट कोऑर्डिनेटिंग कमिटी (एसएनसीसी) के लिए स्वैच्छिक काम शुरू किया। उन्होंने अपना समय काले मतदाताओं के पंजीकरण में लगाया। उन्होंने 60,000 से भी अधिक लोगों का पंजीकरण करवाया।



मार्टिन लूथर किंग, जूनियर का जन्म अटलान्टा, जॉर्जिया में 15 जनवरी 1929 को हुआ। उनके प्रेरणादायी भाषणों और अहिंसक विरोध की पैरवी ने उन्हें अमरीकी नागरिक अधिकार आन्दोलन का प्रमुख नेता बनाया। 1964 में, पैंतीस वर्ष की आयु में उन्हें नोबेल शान्ति पुरस्कार से नवाज़ा गया। उनकी बढ़ती ताकत और प्रभाव से नस्ली असमानता में विश्वास करने वाले चिन्तित हुए। 4 अप्रैल 1968 में उनकी हत्या कर दी गई। किंग का जन्म दिवस अब राष्ट्रीय अवकाश के रूप में मनाया जाता है।



रिक ड्युप्रे का जन्म सेंट पॉल, मिनेसोटा में हुआ था। वे परिवार के नौ बच्चों में सबसे छोटे थे। जब वे किंडरगार्टन में ही थे उन्होंने अपनी शिक्षिका से कहा कि उनकी माँ सर्कस में क्लाउन (मसखरी) है। जब माँ ने रिक से पूछा कि “तुमने अपनी शिक्षिका से झूठ बोला था या उन्हें कहानी सुनाई थी?” रिक ने कुछ हिचक के साथ जवाब दिया “कहानी!” उनकी माँ मुस्कुराई। रिक तब से कहानियाँ सुनाते आ रहे हैं।

बड़े होने के बाद रिक ने आयोवा के कॉर्नेल कॉलेज में कला व अंग्रेजी का अध्ययन किया। अपने सीनियर वर्ष में वे एक विलक्षण महिला, पेट रोज़ेल से पढ़े, जिन्होंने रिक को सिखाया कि जो कुछ तुम्हारे पास हो उसी से नस्लवाद से लड़ो। रिक की यह पहली किताब उसी सलाह की उपज है। उनकी दूसरी किताब *द विशिंग चेयर* जल्द ही प्रकाशित होने वाली है।

